RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.038

भारत में अनुसूचित जातियों की समस्या

डॉ0 विकास कुमार

इतिहास विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

अवर्ण, शूद्र, हरिजन, अनुसूचित और बहुजन नाम से विभिन्न कालखण्डों में जाने जानी वाली जातियाँ आज 'दलित' के रूप में अपने को संबोधित करने से खुश हैं। दुसरे भी उसे दलित ही कहने लगे हैं। हर वर्ग को अपना नाम चुनने का हक है। 'दलित' एक सटीक शब्द है, क्योंकि यह न केवल उनकी पूरी स्थिति का निचोड़ है, बल्कि संघर्ष की भी प्रेरणा देता है।

वैदिक काल में दलित वैदिक धर्म में आत्मसात नहीं थे। वे वेद–वाह्य थे और समस्त दैविक धर्म तथा संस्था में बहिष्कृत थे। वे अस्पृश्य या अछूत थे। वे चातुर्वर्ण्य या चातुवर्णिक समाज से बाहर थे। वे अवर्ण थे।

वैदिक धर्म के लोप हो जाने के बाद उसकी जगह पौराणिक धर्म विकसित हुआ। इस धर्म ने दलित को चातुर्वर्ण्य के अन्दर रखा। ये शूद्रवर्ण के रूप में जाने–जाने लगे।

'दलित' शब्द से पहले महाराष्ट्र में तब प्रचलित हुआ, जब 1956 में अंबेडकर के निधन के बाद अंबेडकरवाद ह्रासोन्मुख हो गया और दलित चीतों ने बड़े पैमाने पर इसे लोकप्रिय बना दिया।

दलित समस्या का एक लंबा इतिहास है। यह बहुत ही प्राचीन समस्या है। इस समस्या का बहुत बड़ा काल धर्म से संबंधित था जो कल का सवाल था। आज का सवाल उनकी राजनीति से जुड़ा है। दलितों के धर्म की समस्या चार युगों की समस्या हैं, जिन्हें क्रमशः वैदिक धर्म का युग पौराणिक धर्म का युग, सन्तमत का युग और वर्तमान हिन्दू धर्म का युग कहा जा सकता है।

पहले पहल वैदिक काल में दलितों की समस्या पैदा हुई थी। दलित वैदिक धर्म में आत्मसात् नहीं थे। ग्राम और नगर के बाहर उनका वास था। इसके बावजूद वे चार्तुर्णिक समाज के ग्राम और नगर के सेवक थे। उन्हें उस समाज की किसी संस्था की सदस्यता प्राप्त नहीं थी। वे अपने को समाज का भयवश या स्वयं सेवक समझते थे। और समाज से स्वतंत्र रहकर जीवन निर्वाह करते थे। उनकी समस्या थी, सम्पूर्ण समाज से उनका अलगाव या बहिष्कार। एक ओर दास या दस्यु थे तो दूसरी ओर आर्य थे। आर्यों और दस्युओं के बीच का संघर्ष लंबे काल तक चलता रहा। अन्ततः आर्यों का चातुर्वर्ण्य संकीर्ण हो गया, दस्युओं से वह मिश्रित हो गया और अगणित जातियों में बँट गया। उधर दस्युओं की भी संस्कृति धीरे–धीरे आर्य संस्कृति हो गई। इस आचार प्रदान ने आर्यों को विवश किया कि वे चरित्र को कुल से अधिक महत्व दें। आर्य और दस्युओं के संघर्ष के फलस्वरूप आधार प्रधान या चरित्र प्रधान आविर्भाव हुआ और यह मान्यता चली कि वृत्त से ही मनुष्य आर्य या श्रेष्ठ होता है। वेदव्यास और विदुर को हम इस युग के प्रतिनिधि या नेता मान सकते है, जिन्होंने आर्य और दस्यु के नैतिक तथा धार्मिक अलगाव को खत्म किया और दोनों को एक धर्मशास्त्र तथा नीतिशास्त्र में बाँधा। आर्य या श्रेष्ठ पुरूष वह है जिसका चरित्र श्रेष्ठ हो। चरित्रवान दस्यु भ्रष्ट ब्राह्मण से श्रेष्ठ है।

आर्य और दस्यु के परस्पर संकीर्ण होने से वैदिक धर्म का लोप हो गया उसके स्थान पर पौराणिक धर्म का विकास हुआ। इस धर्म के दलितों चातुर्वर्ण्य के अन्दर रखा, उनको पुराण श्रवण, भक्ति आत्म ज्ञान तथा मोक्ष का अधिकारी माना और उनके लौकिक कर्त्तव्य निश्चित किये। इस काल में वे समाज के कारीगर माने गये। उन्हें कारीगरी के अतिरिक्त अन्य कलाओं और विधाओं का भी ज्ञान मिलता था। एक कोरी ने राजा भोज से संस्कृत कविता में कहा था– राजन्! मैं कविता करता हूँ और जाता हूँ (कवयामी वयामि यामि)। पौराणिक हिन्दू धर्म न धार्मिक समता की व्यवस्था की। एक ही परमात्मा सबका पिता है। गंगा, तीर्थ, पर्व–त्योहार आदि सभी हिन्दुओं द्वारा सामान्य रूप से मान्य है। अखिल भारतवर्ष के भूगोल तथा इतिहास को ये सभी समान रूप से पवित्र समझते हैं। राम, कृष्ण, शिव, गणेश, हनुमान, दुर्गा, काली इत्यादि देवता सभी के पूज्य है। इस सब बातों से दलितों की धार्मिक समस्या हल हो गई। उसी समय एक विदेशी धर्म अर्थात् इस्लाम भारत आया। उनके प्रचारकों ने दलिमोष समाज से पृथक रखने का प्रयास किया। उन्होंने उनको इस्लाम में दीक्षित करने का प्रयत्न किया। बहुत–सी दलित जातियाँ मुसलमान हो भी गई। लेकिन, वहाँ उनकी धार्मिक समस्या हल न हो सकी। कबीरदास उसके उदाहरण है। उनका जन्म उस जाति में हुआ था जो इस्लाम धर्म में नवदीक्षित थी। उनका धार्मिक विकास बहुत ऊँचा था। वे उच्च कोटि के संत थे। किन्तु मुसलमानों ने उन्हें महत्व नहीं दिया। उल्टे उनका अद्वैतवाद उनके लिए कुफ्र हो गया। स्पष्टतः इस्लाम अपने अन्दर दीक्षित दलितों को धार्मिक चिन्तन की स्वतंत्रता नहीं देता था। वह उनको अपना पिट्ठू गूंगा या गँवार अनुयायी ही रखना चाहता था। फल यह हुआ कि दलितों को इस्लाम धर्म में जाना बंद हुआ। कबीरे, दादू इत्यादि मुसलमान सन्तों ने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नारा लगाया कि वैदिक धर्म और इस्लाम धर्म, दोनों भ्रम हैं। उधर रैदास, नाभादास इत्यादि हिन्दू दलित सन्तों ने भी उनके सिद्धान्त को महत्त्व दिया। इन संतों के द्वारा सन्तमत का प्रवर्त्तन हुआ। यह सन्तमत, पौराणिक हिन्दू धर्म का ही विकास हैं इसमें वही अद्वैतवाद है, वहीं आचार प्रधान धर्म हैं, वही भक्ति का सिद्धान्त है, जो पुराणों में मिलता हैं किन्तु पुराणों ने वैदिक चातुर्वर्ण्य के स्थान पर जाति–पाति की व्यवस्था की थी और इन संतों ने जाति–पांती तोड़ने का विधान बनाया। उन्होंने पहले–पहलू अछूतों को हरिजन या हरिदास कहा था, जिसे बाद में गाँधीजी ने बहुत प्रचलित किया। सन्तमत सारे देश में फैला हर जाति में उच्चकोटि के ज्ञानी संत हुए हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा में उच्चकोटि के साहित्य का निर्माण किया है। उन्होंने अपने अनुयायियों के नैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा उठाया है। यही कारण है कि आज समस्त हिन्दू जाति उन पर गर्व करती है और उन्हें अपना संत समझती है। इस्लाम धर्म से दलितों की धार्मिक समस्या हल नहीं हो सकती थी क्योंकि वहाँ उनकी रचनात्मक शक्ति का उपयोग बिल्कुल नहीं था। फिर वह उनके इतिहास, संस्कृति और भाषा को मिटाकर अपने इतिहास, संस्कृति और भाषा को लाद रहा था। जहाँ तक दलितों की सामाजिक और आर्थिक दशा का प्रश्न था, उसका भी समाधान इस्लाम धर्म में नहीं हुआ। जो दलित मुसलमान हुए थे, उनकी वहीं, सामाजिक और आर्थिक दशा है जो हिन्दू दलितों की हैं, वहाँ जुलाहा, जुलाहा ही रह गया, मेहतर, मेहतर ही रह गया, मोची, मोची ही रह गया इत्यादि। इससे सिद्ध हो गया कि दलितों के धर्म–परिवर्तन का सवाल उठाना ही गलत था।

कहीं–कहीं मुसलमानों की तीसरी जाति भी है, जो सबसे नीच समझी जाती है– उसे 'अरजल' कहते हैं जैसे हलालखोर, लालबेगी, अब्दाल, बेदीऊ। इन लोगों के साथ अन्य मुसलमान कोई सम्पर्क नहीं रखते। इन्हें मस्जिद में भी जाने की इजाजत नहीं है। इनके मुर्दे सार्वजनिक कब्रगाह में नहीं गाड़े जा सकते।

स्पष्टतः, मुस्लिम धर्म में हिन्दू धर्म भिन्न होने के बावजूद भारतीय समाज के अनुकूल उसमें भी परिवर्तन हुआ और भारतीय मुस्लिम समाज में भी छूआ–छूत के भेद भाव उत्पन्न हुए तथा इस्लाम धर्म में दलितों की समस्या का समाधान नहीं हो सका। इस्लाम धर्म कहाँ हिन्दू दलितों की समस्या हल करता, वहाँ उसने अपने समाज में भी दलितों को पैदा कर दिया जो भारत के लिए एक दूसरी समस्या बनकर देश के सामने उपस्थित हो गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मुलसमान समुदाय में जाति व्यवस्था, डॉ0 सर्वदेश्वर प्रसाद, लोकमुख, 24 नवंबर, 1966।
2. हिस्ट्री ऑफ कांग्रेस, पट्टाभिसीतारमैया, 1931, पृ0 530, अंग्रेजी संस्करण।
3. बाबू जगजीवन राम : भारत में जातिवाद और हरिजन समस्या : पृ0 9, दिल्ली, 1981 : पृ. 9।
4. श्री निवास : कास्ट इन माडर्न इंडिया : पृ. 123–24।
5. एम0 एन0 श्रीनिवास, आधुनिक भारत में जातिवाद तथा अन्य निबंध, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1992।
6. हुसैन एस0 आबिद, भारत की राष्ट्रीय संस्कृति, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, दिल्ली, 1993।
7. चमड़िया अनिल, जातिवाद : सत्ता की खोज, बिहू पब्लिकेशन, जमशेदपुर : 1995।

RRIJM 2015, All Rights Reserved